INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 6 | JULY – 2024

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में आधुनिकता का अध्ययन

पूजा तिवारी
शोधार्थी हिन्दी
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. क्रांति मिश्रा
प्राध्यापक हिन्दी
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सतना (म.प्र.)

सारांश –

उषा प्रियंवदा अपनी लेखनी के माध्यम से प्रत्येक मानस पर गहरी छाप छोड़ने की कला को धारण करने वाली एक महान लेखिका हैं। उनकी कहानियों के पात्र, शैली, परिवेश, वातावरण, संवाद, कथ्य सभी कुछ आधुनिक परिवेश लिए हुए है। उनके एक–एक शब्द में आधुनिकता का बोध निहित है। उनकी कल्पना, अनुभव, अनुभूति सभी विशिष्ट स्वरूप को धारणा करने वाले हैं। वह स्वयं कहती हैं कि, ''मेरी कहानियों के पीछे एक बीज जरूर होता है। एक विचार, एक इमेज, एक अनुभव या अनुभूति का चैलेंज मुझे उत्साहित करता है। डेडलाइन्स मुझे प्रेरित करती है। मेरी प्रिय कहानियाँ वे है, जो फ्लैश में जन्मी और मैंने एक या दो दिन में लिख डाला।''[1] उनके ये शब्द उनकी कहानियों में निहित कल्पना, अनुभव, अनुभूति और फ्लैश बैक पद्धति को अभिव्यक्त करते है। उन्होने सदा अपने चारों ओर व्याप्त यथार्थ वातावरण को, वास्तविक घटनाओं को और पात्रों के सत्य अनुभवों को अपनी कहानियों में चित्रित किया है।

मुख्य शब्द –उषा प्रियंवदा, कला, लेखिका, शैली, परिवेश, वातावरण, संवाद एवं कथ्य।

प्रस्तावना –

उषा प्रियंवदा की कहानियों में आधुनिक वातावरण में व्याप्त भावनाओं, संवेदनाओं, विडंबनाओं, परिस्थितियों, मनोभावनाओं को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। उनकी कहानियों में आज की नारी की समस्याएँ, संवेदनाएँ, पीड़ाएँ बड़ी ही सूक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त हुई हैं। उनकी प्रसिद्ध कहानी वापसी परिजनों की आधुनिक, भौतिकवादी, स्वच्छन्द जीवन दृष्टि व घोर व्यक्तिवादी जीवन दर्शन के यथार्थ को धारण किए हुए हैं। वर्तमान युग में व्यक्तियों की स्वार्थपरता के भाव उनकी कहानियों में स्पष्ट परिलक्षित होते है। उनकी कहानी 'वापसी' में गजाधर बाबू के हृदय की टीस स्पष्ट परिलक्षित होती है जो भरे पूरे परिवार में स्वकेंद्रित परिजनों के मध्य अंधेरों से युक्त है– "घर छोटा था और ऐसी व्यवस्था हो चुकी थी कि उसमें गजाधर बाबू के रहने के लिए कोई स्थान न बचा था। जैसे किसी मेहमान के लिए कुछ अस्थायी प्रबंध कर दिया जाता है, उसी प्रकार बैठक में कुर्सियों को दीवार से सटाकर बीच में गजाधर बाबू के लिए पतली–सी चारपाई डाल दी गई थी। गजाधर

बाबू उस कमरे में पड़े–पड़े, कभी–कभी अनायास ही, इस अस्थायित्व का अनुभव करने लगते। उन्हें याद हो आती उन रेलगाड़ियों की, जो आती और थोड़ी देर रूक कर किसी और लक्ष्य की ओर चली जाती।''[2]

उषा प्रियंवदा की 'कितना बड़ा झूठ' कहानी संग्रह की अधिकांश कहानियाँ अमेरिका तथा यूरोपीय परिवेश में लिखी गई है। जबकि इनमें कुछ भारतीय परिवेश को भी धारण करती हैं लेकिन फिर भी किसी न किसी रूप में नारी पात्रों का संबंध यूरोप अथवा अमेरिका से जुड़ ही जाता है। अतः इन कहानियों में आधुनिकता के प्रबल स्वर देखने को मिलते है। इस कहानी संग्रह में सम्मिलित कहानियाँ – संबंध, प्रतिध्वनियाँ, कितना बड़ा झूठ, ट्रिप, नींद, सुरंग, स्वीकृति, मछलियाँ आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं जो विषयवस्तु और शिल्प की दृष्टि से आधुनिक स्वरूप को धारण करती हैं।

उषा प्रियवंदा ने अपनी कहानियों के माध्यम से मनुष्य के जीवन में निहित अकेलेपन और निराशा को बड़ी ही सूक्ष्मता के साथ अभिव्यक्त किया है। व्यक्ति आर्थिक रूप से कितना ही स्वतंत्र और सबल क्यों न हो लेकिन जीवन के अकेलेपन से वह आज भी दुःखी है। आधुनिकता की कहानी 'छुट्टी का दिन' में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है जहाँ माया को अकेलेपन से भागने पर भी मुक्ति नहीं मिलती जिसे देखकर स्वयं को दोषी ठहराते हुए वह कहती है कि, ''दोष अपना ही था, फिर भी न जाने क्यों उसे रोना आ गया। रेशमी ब्लाउज के कच्चे निकल जाने पर नहीं, बल्कि अपनी जिंदगी के पैटर्न पर उसके खोखलेपन और सराहनीय पर। किसलिए वह घर–बार छोड़कर इतनी दूर आकर पड़ी थी, किसलिए वह सुबह से शाम तक कॉलेज में मगजपच्ची करती थी और एक दिन वह सोचे कि इस जीवन में उसने क्या पाया, तो पता चले कि वह एक लंबे अनंत मरूस्थल की तरह था।''[3]

विश्लेषण –

कथ्य किसी भी कहानी का महत्वपूर्ण अंग होता है, जो आस–पास के वातावरण, काल, देश, संस्कृति, सभ्यता, भाषा, भाव आदि से ओतप्रोत होता है। वास्तविक रूप से कथानक से सत्य घटनाओं की अभिव्यक्ति का महत्व होता है। वर्तमान समय में कथा साहित्य में घटनाओं को अपेक्षाकृत कम महत्व दिया जाने लगा है। आज घटनाक्रम के स्थान पर सम्यभावों से परिपूर्ण केंद्र बिंदु आधारित कथ्य पर बल दिया जाता है। इतिहास के पूर्व पृष्ठों पर जाकर यदि साहित्य का अवलोकन किया जाए तो ज्ञात होगा की पूर्ववर्ती कथा रचनाओं में कथावस्तु का विवरणात्मक दृष्टि से चित्रांकन किया जाता था। कथावस्तु भाषा शिल्प के आधार पर मात्र स्थूलता को धारण करने वाली होती थी। लेकिन युग के बदलने के साथ–साथ संस्कृति, धर्म, नियम और प्रतिमान भी बदल जाते है। फलस्वरूप वर्तमान में मानसिक तत्व को कथा में आकार प्रकार देने का प्रयास किया जाता है। घटना संगठन के स्थान पर पात्र एवं चरित्र की मनोगति के अनुसार घटना को स्वरूप प्रदान करना आज की कथावस्तु का वैशिष्ट्य है। पूर्ववर्ती कथानकों को यदि गहन दृष्टि से देखा जाए तो तत्कालीन समय में कथाएँ अत्यधिक लंबी हुआ करती थीं। हालाँकि प्रेमचंद के बाद के हिंदी उपन्यासों में जिस कथावस्तु का वर्णन किया गया है वह आकार प्रकार में संकुचित सी प्रतीत होने लगी है। लेकिन इसी के साथ–साथ उपन्यासों में भावनाओं की गहराई असीम होने लगी थी। अतः आधुनिक कथा साहित्य आकार प्रकार में छोटे होते जा रहे है। इसी को कथानक के ह्रास के रूप में देखा जाता है।

कथानक का ह्रास आज आधुनिक कथाकारों की अभिव्यक्ति का माध्यम होता जा रहा है। ऊषा प्रियवंदा की रचनाओं में गहन चिंतन करने और अध्ययन करने पर जो निष्कर्ष सामने आता है वह भी यही है कि, उन्होनें अपनी रचनाओं में संवेदनाओं की अभिव्यक्ति को विशेष महत्व प्रदान किया है। हालाँकि उनके कथानक अत्यधिक सीमित होते चले गए हैं। लेकिन उसके बाद भी उनकी रचनाओं में जो भाव प्रवणता है, आधुनिक प्रवृत्तियों का जो विशिष्ट विश्लेषण है वह अनुपम है और वही उनकी रचनाओं का विशेष स्वरूप है। उनकी रचनाओं में पाठक को अपनी ओर आकृष्ट करने वाले पात्र मानसिक और वैचारिक शक्ति से ओतप्रोत हैं।

उषा प्रियवंदा के उपन्यासों का कथानक हर ओर एक नवीन भाव से मंडित है। उनके प्रत्येक कथानक में भावनाओं को महत्व प्रदान किया गया है। उनके उपन्यास 'शेष यात्रा' में प्रति द्वारा परित्यक्त अनुका के जीवन तथा व्यक्तित्व का विकास निहित है। उनके 'पचपन खंभे लाल दीवारें' एक भाव प्रधान कथानक से ओतप्रोत है जहाँ पर नायिका सुषमा के खोखले जीवन में नील के आने से क्या बदलाव आता है, यह चित्रित किया गया है। उनके अन्य उपन्यास 'रूकोगी नहीं राधिका' के कथानक के द्वारा जीवन में द्वितीय विवाह से

उत्पन्न होने वाली पिता की मानसिक वेदना, उलझन और भटकन को अंकित किया गया है। अनुभूतियों और मानसिक संवेदनाओं का प्राकाट्य इन उपन्यासों में हुआ है। उषा प्रियवंदा की कहानी 'नींद' में अकेलेपन से संत्रस्त विलप्त मन का चित्र उभर आता है,[4] तो वहीं दूसरी ओर 'कितना बड़ा झूठ' कहानी में वैवाहिक संबंध का खोखलापन कथ्य बनकर आता है।[5]

उषा जी की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता है, उनकी कहानियों को हिंदी साहित्य जगत में एक नया ही रूप प्रदान किया है। हालाँकि, संक्षिप्तता के कारण कथानक का ह्रास हो जाता है, लेकिन ये सशक्त पाठक को एक ओर केंद्रित कर तत्काल आनंद से और रस से जोड़ने वाली होती है। उसमें एक ही संवेदना होती है। उषा प्रियवंदा ने एक प्रकार से पाश्चात्य तथा भारतीय परिवेश में अपने जीवनानुभवों को अपनी कथा–रचनाओं में अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'छुट्टी का दिन' कहानी उनके अपने अनुभवों का प्रतिबिंब सा मालूम देता है।[6] इलाहाबाद से अति दूर दिल्ली में स्थित लेडी श्री राम कॉलेज में कार्य करते हुए उन्होंने इस कहानी में अभिव्यक्त कर दिया। किसी के साथ उन्होंने एक कहानी का सृजन किया जो वापसी नाम से अभिहित की गई यह कहानी पारिवारिक विघटन और अर्थ केंद्रीय सामाजिक व्यवस्था रचित पहली मौलिक कहानी जिसमें पात्रों की मानसिकता और संवेदना की दृष्टि से कथासूत्र को वृद्धि प्रदान की गई है।

उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य का गहन अध्ययन करने के उपरान्त एक सूत्र यह भी सामने आता है, कि उनकी रचनाओं में व्याप्त कहानियों की कथावस्तु में कहीं न कहीं क्रमबद्धता अभावग्रस्त परिलक्षित होती है। इसके विपरीत उनकी कथा आंतरिक अनुभूतियों और व्यक्तिगत मानसिकता के साथ क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत होते हुए दृष्टिगोचर होती है। उनकी कथाओं में एक पुष्प माला के गुंथन की अनूभूति होती है और ऐसा प्रतीत होता है जैसे उस कथा पुष्पमाला के मध्य में पूर्व स्मरण के द्वारा घटनाओं को गूंथ दिया जाता है। उनकी विभिन्न रचनाओं जैसे 'स्वीकृति',[7] 'श्रेष्ठ यात्रा', 'प्रतिध्वनि',[8] रूकोगी नहीं राधिका' आदि होती है।

अत्यधिक गहन अध्ययन के बाद यह अनुभूति होती है कि, उषा प्रियवंदा के उपन्यासों तथा कहानियों का क्षेत्र अत्यधिक संकुचित है। उनकी लेखनी मुख्य रूप से उच्च वर्ग तथा मध्य वर्ग की भावनाओं को ओतप्रोत करते हुए चली है। निम्न वर्ग की कथा उन्होंने लिखी ही नहीं है। आधुनिक फैशन परस्त जिंदगी की विडंबनाओं, विसंगतियों का चित्र उनकी रचनाओं में मुख्य रूप से दृष्टिगोचर होता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उषा प्रियवंदा का कथा साहित्य अत्यधिक सरल, सहज और भाव घटना प्रधान है। उनकी रचनाओं की कथावस्तु में समस्त घटनाएँ एक केंद्रबिंदु से जुड़े भावों व घटनाओं का चित्रण प्रतीत होती है। उषा प्रियंवदा के आधुनिक विचार उनके कथ्य में निहित शिल्पगत आधुनिकता से जोड़ते है। उनके समस्त पात्रों में आधुनिक अनुभूति देखने को मिलती है। उनकी कहानियों में स्वतंत्र अस्तित्व की खोज, बिखरते हुए पारिवारिक रिश्तों, आधुनिक मनुष्य के अकेलेपन, नारी जीवन की घुटन आदि मुख्य बिंदुओं के इर्दगिर्द घूमती हुई प्रतीत होती है। इस आधुनिक विशिष्टता को धारण करने वाला उनका कथ्य आधुनिक शैली में मंडित होकर उनकी कहानियों में अवतरित हुआ है।

संदर्भ –

1 प्रियंवदा, उषा – सम्पूर्ण कहानियाँ, भूमिका से
2 प्रियंवदा, उषा – सम्पूर्ण कहानियाँ, पृष्ठ 144
3 प्रियंवदा, उषा – सम्पूर्ण कहानियाँ, पृष्ठ 176
4 प्रियंवदा, उषा – कितना बड़ा झूठ, कहानी संकलन, पृष्ठ 38
5 प्रियंवदा, उषा – कितना बड़ा झूठ, कहानी संकलन, पृष्ठ 40
6 प्रियंवदा, उषा – जिंदगी और गुलाब के फूल, पृष्ठ 86
7 प्रियंवदा, उषा – कितना बड़ा झूठ, कहानी संकलन, पृष्ठ 33
8 प्रियंवदा, उषा – कितना बड़ा झूठ, कहानी संकलन, पृष्ठ 27